नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक 06.12.2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में **डॉ. भीमराव अम्बेडकर महापरिनिर्वाण दिवस** के अवसर पर अंग्रेजी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर **कविता मंध्यान** ने कहा कि **बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर भारत में सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे।** भारतीय संविधान के शिल्पी एवं समाज सुधारक थे। संविधान के माध्यम से सामाजिक समरता का अमर संदेश देकर उन्होंने भारत का नाम विश्व में गौरवान्वित किया। उनका स्पष्ट मानना था कि छुआ–छुत गुलामी से भी बदतर अवस्था है। भारतीय समाज में व्याप्त छुआ–छुत और भेद–भाव जैसे कोढ़ के लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया। वह एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे। मुस्लिम लीग द्वारा अलग पाकिस्तान की मांग का उन्होंने पूरजोर विरोध किया। उस समय ही उन्होंने चेतवनी देते हुए कहा था कि दो देश बनाने के समाधान का वास्तिवक क्रियान्वयन अत्यन्त कठिनाई भरा होगा उनकी भविष्यवाणी आज भी भारत–पाकिस्तान सीमा–विवाद एवं आपसी सम्बन्ध के रूप में समझा जा सकता है। भारत जैसे विविधता वाले देश में एक संविधान के अन्तर्गत **'सर्व जन हिताय सर्व जन सुखाय'** के भाव को प्रतिस्थपित करना डॉ. भीमराव अम्बेडकर की दूरदृष्टि समझ का ही परीणाम है। उन्होंने संविधान को अंगीकार करते समय कहा कि मैं यह कह सकता हूँ अगर कभी कुछ गलत हुआ तो उसका कारण यह नहीं होगा हमारा संविधान खराब था बल्कि उसका उपयोग करने वाले मनुष्य का कृत अधम था। डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 जिसके अनुसार जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त था (जिसे हाल ही में वर्तमान सरकार द्वारा हटाया भी गया है) के खिलाफ थे और उसका प्रबल विरोध करते हुए कहा था कि यह प्रावधान संविधान की भावनाओं के विपरीत है और यह कदम भारत के राष्ट्रीय हितों के लिए आत्मघाती सिद्ध होगा। वे समान नागरिक संहिता के भी पक्षधर थे।

अम्बेडकर का जन्म एक महार जाति में हुआ था, जो कि उस समय में अस्पृश्य मानी जाती थी। अतः जीवन के प्रारम्भिक दौर में उन्हें कदम–कदम पर सामाजिक भेद–भाव तथा अपमानित व्यवहार की यातनाएं सहनी पड़ी। जिसके कारण वे समाज में व्याप्त इन कुरीतियों के विरूद्ध संघर्ष करने हेतु दृढ़ संकल्पित हो उठे। कालोपरान्त बाबासाहब दलितों के मसीहा और एक महान समाज सुधारक के रूप में जाने गये। उन्होंने उच्चवर्गीय मानसिकता को चुनौति देते हुए निम्न वर्ग में भी ऐसे महान कार्य किये, जिससे वे सारे भारतीय समाज में श्रद्धेय हो गये। जीवन में विपरीत परिस्थियों के बावजूद 'जहॉ चाह वहॉ राह' को चरितार्थ करते हुए बाबासाहब अम्बेडकर उच्च शिक्षा की नई उचाईयों की ओर अग्रसर होते रहे। 1912 में उन्होंने बम्बई विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान में स्नातक डिग्री प्राप्त की। सियाजीराव गायकवाड़ द्वारा स्थापित योजना के तहत बड़ोदा राज्य छात्रवृत्ति

प्राप्त कर उन्होंने अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए न्यूयॉर्क के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में दाखिला लिया और उन्होंने वहॉ अर्थशास्त्र के साथ–साथ इतिहास, समाजशास्त्र, दर्शन एवं राजनीतिशास्त्र जैसे विषयों में भी स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। 1920 में लंदन विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि दी गई। इस प्रकार उनके पास उच्च शिक्षा की कुल 32 डिग्रियां थी और विदेश जाकर अर्थशास्त्र में पी.एच.डी. करने वाले पहले भारतीय हुए।

भारत के आजादी के पश्चात सरकार ने डॉ. अम्बेडकर को मंत्रीमण्डल में आमंत्रित किया तथा उन्होंने स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री के रूप में कार्यभार संभाला। उन्हे भारत के संविधान निर्माण समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। डॉ. अम्बेडकर द्वारा तैयार किया गया संविधान पहला सामाजिक दस्तावेज था जिसके प्रावधानों में भारत के नागरिकों के लिए संवैधानिक आश्वासन और नागरिक स्वतंत्रता की सुरक्षा के साथ–साथ धर्म की स्वतंत्रता भेद–भाव के रूपों पर प्रतिबन्ध और छूआ–छूत को समाप्त करना शामिल था। उन्होंने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्ग के सदस्यों के लिए स्कूल कालेजों एवं नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था का कार्य किया। 1935–1936 में उन्होंने 'वेटिंग फॉर वीजा' नाम से एक ऑटोबायोग्राफी भी लिखी जिसका प्रयोग कोलम्बिया विश्वविद्यालय अपने पाठ्य–पुस्तक के रूप में करती है। अपनी मृत्यु से केवल तीन दिन पहले ही उन्होंने अपनी पांडुलिपी 'बुद्ध और उनका धर्म' को पूरा किया। भारत सरकार द्वारा 1990 में डॉ. भीमराव अम्बेडकर को मराणोपरान्त भारतरत्न पुरस्कार से सम्मनित किया गया। 06 दिसम्बर 1956 को भारत का यह महान सपूत अपने नश्वर शरीर को त्याग कर माँ भारती की गोद में समा गया। उनके परिनिर्वाण दिवस पर यह महाविद्यालय परिवार सामाजिक समरसता मुख्य सचेतक बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर को शत्–शत् नमन करतें हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। कार्यक्रम में विद्यार्थी, शिक्षक व कर्मचारी उपस्थित रहे।

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी